# जेल की परी

# एलिजाबेथ फ्राई

जेल की परी

# एलिजाबेथ फ्राई

जॉनसन

बहुत पहले इंग्लैंड में न्यूगेट जेल नाम की एक भयानक जगह थी. कानून तोड़ने वाले लोगों को इस जेल में भेजा जाता था. न्यूगेट के कैदियों के पास सोने के लिए कोई पलंग और बिस्तर तक नहीं था. जब वे बीमार पड़ते तो उनके पास कोई दवा नहीं होती थी. और वे हमेशा भूखे रहते थे.
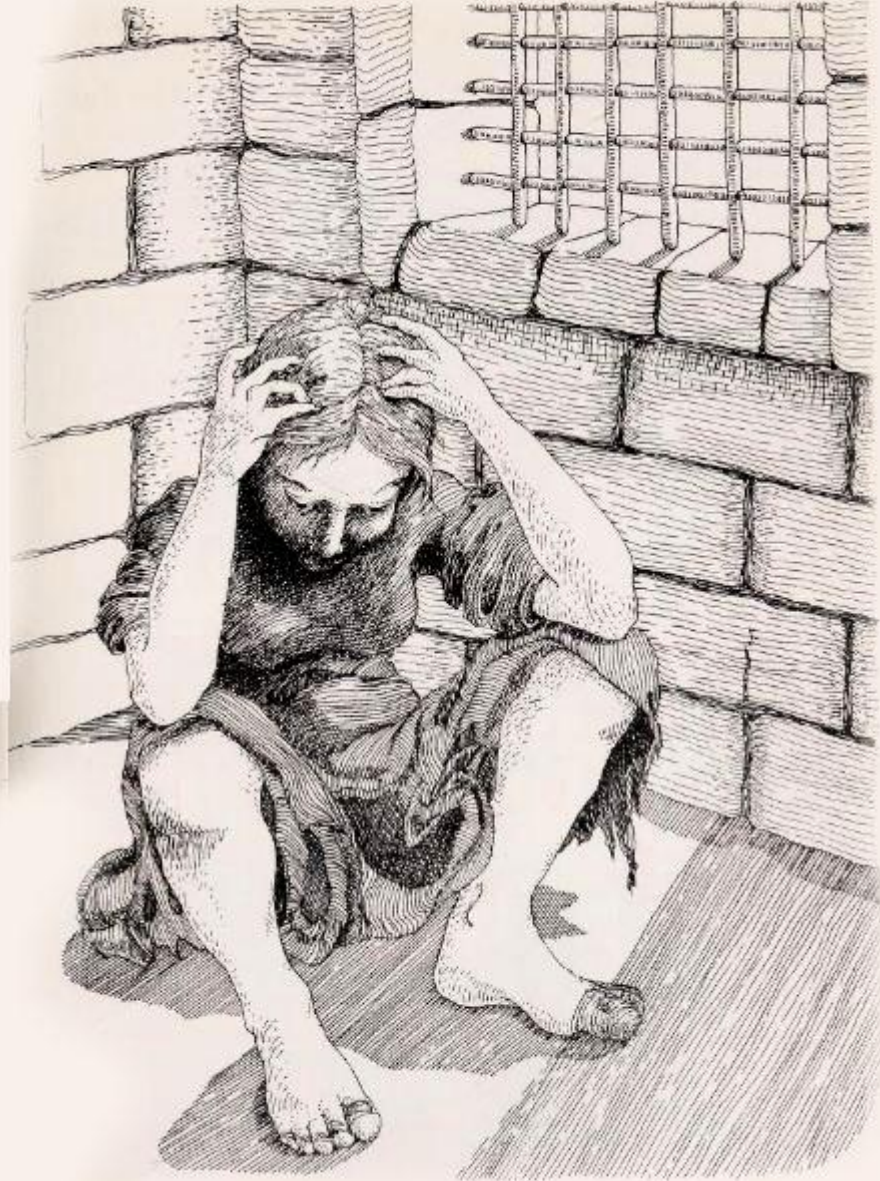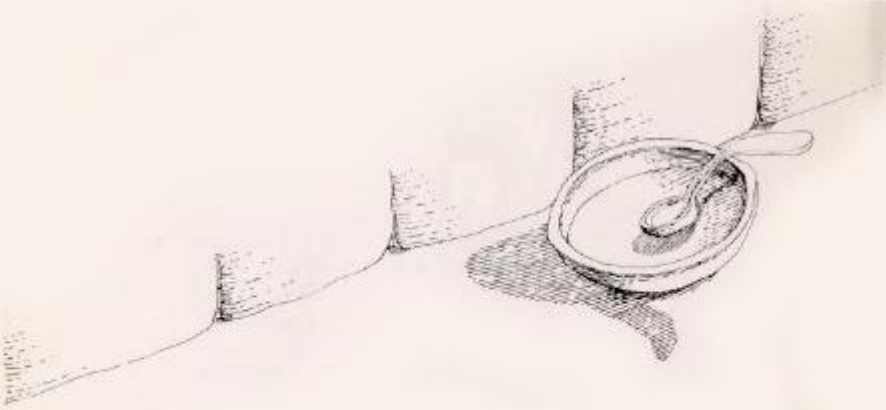
लोगों को न्यूगेट के कैदियों की कोई परवाह नहीं थी.
कई लोगों ने यह भी कहा, "वो कैदी अच्छे भोजन और कपड़ों के हकदार ही नहीं हैं."
लेकिन कुछ लोगों को कैदियों के हालात पर तरस आया. उन्हें खासकर इस बात का दुःख हुआ कि बच्चों को अपनी माताओं के साथ जेल में रहना पड़ता था. लेकिन जिन लोगों को अफ़सोस हुआ, उन्होंने समस्या के बारे में कुछ नहीं किया. उन्होंने बस उसके बारे में बातें और शिकायतें कीं. ज्यादातर लोगों ने सिर्फ यही कहा, "हमें नहीं पता, कि हम क्या करें?"

अंत में, एक महिला ने उसके बारे में कुछ किया. उसका नाम था एलिजाबेथ फ्राई. एलिजाबेथ फ्राई ने जेल की भयानक स्थिति के बारे में सुना. इससे वह दुखी हुई और उसे गुस्सा भी आया. उसे लगा कि जैसे भगवान उससे कैदियों की मदद करवाना चाहते थे. वह यह भी जानती थी कि सिर्फ कोरी बातों से समस्या सुलझाने में बहुत मदद नहीं मिलेगी. इसलिए उसने एक ठोस योजना बनाई.

अगले दिन, एलिजाबेथ ने एक मित्र को अपनी योजना के बारे में बताया. "मुझे पता है कि न्यूगेट जेल में महिलाओं की मदद कैसे की जा सकती है," उसने कहा. "मैं महिला कैदियों से मिलने जाऊंगी. मैं उनके लिए कपड़े, भोजन, कम्बल और दवाएं लेकर जाऊंगी. मैं बाइबल भी लेकर जाऊंगी और उन्हें भगवान के प्रेम के बारे में बताऊंगी. इसके बारे में तुम्हारा क्या विचार है?" एलिजाबेथ ने अपने मित्र से पूछा. (एलिजाबेथ फ्राई क्वेकर पंथ की थीं) फिर एलिजाबेथ ने पूछा, "क्या आप मेरे साथ जेल में चलेंगी?"

"लगता है कि तुमने अपना दिमाग खो दिया है?" एलिजाबेथ की दोस्त ने कहा. "वे महिलाएं जानवर हैं! क्यों, अगर तुम वहाँ गईं, तो वे तुम्हारे बालों को नोच डालेंगी. वे तुम्हारी आँखों को नोचेंगी."

"मुझे नहीं लगता कि मेरे साथ ऐसा कुछ बुरा होगा. मैं कैदियों को बताऊंगी कि मैं उनकी दोस्त हूं," एलिजाबेथ में बड़ी शांति से जवाब दिया. “मैं उनसे पूछूंगी कि मैं कैसे उनकी मदद कर सकती हूँ. मैं कल वहां जा रही हूं. तुम चलो या नहीं, यह तुम्हारी मर्ज़ी!"

अगले दिन, एलिजाबेथ फ्राई ने गाड़ी में सवार होकर न्यूगेट प्रिज़न (जेल) की ओर प्रस्थान किया. वह कैदियों और उनके बच्चों के लिए सामान से भरी दो बड़ी टोकरियाँ अपने साथ ले गईं. फिर वो जेल के महिला खंड तक पैदल गयीं और वहां पहुंचकर उन्होंने दरवाजा खटखटाया.
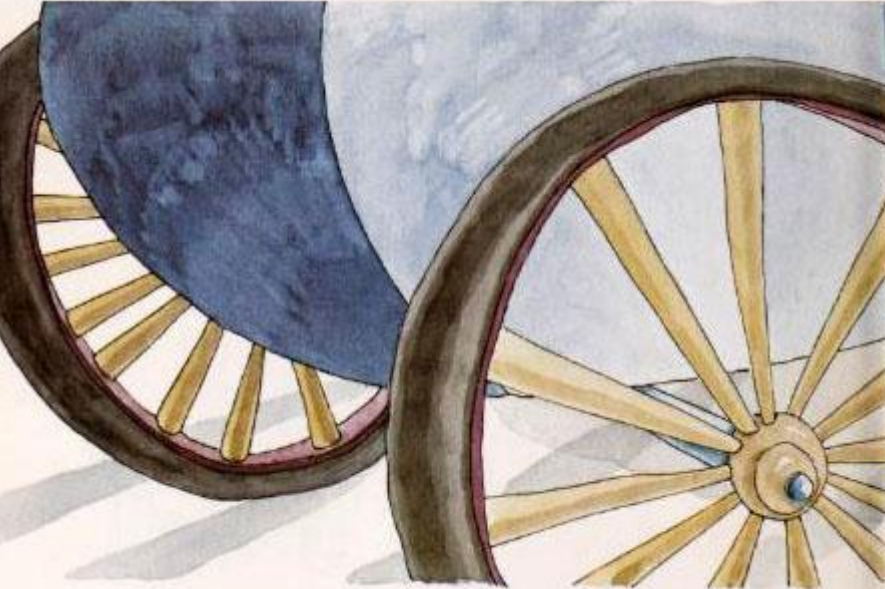
"आप कौन हैं और आप क्या चाहती हैं?" जेल के गार्ड से पूछा. (इंग्लैंड में गार्ड को “टर्नकी” कहा जाता था क्योंकि वह ताले में चाबी घुमाता था.)

"मैं एलिजाबेथ फ्राई हूं," एलिजाबेथ ने उत्तर दिया.

"मैं महिला कैदियों और उनके गरीब बच्चों से मिलने आई हूं. मैं बच्चों के लिए कपड़े लाई हूं. साथ में मैं  भोजन, दवाएं और कम्बल भी लाई हूं."

"आप जेल में नहीं जा सकती हैं," गार्ड ने कहा. "यह नियमों के खिलाफ है. और इसके सही कारण भी हैं. इस जेल में जाने वाले आगंतुकों के साथ भयानक हादसे हुए हैं. नहीं, मैं आपको अंदर नहीं जाने दूंगा. अपनी लाई चीजों आप मुझे दे दें. मैं बाद में उन्हें कैदियों में बाँट दूंगा."

“मैं ऐसा बिल्कुल नहीं करूंगी,” एलिजाबेथ फ्राई ने दृढ़ता से जवाब दिया. “मैं जेल में कैदियों से मिलने आई हूँ, और मैं उनसे ज़रूर मिलूंगी, चाहे तुम्हें यह अच्छा लगे, या नहीं. कृपा मुझे अंदर जाने दो."

गार्ड ने आश्चर्य से भौंहें उठाकर एलिजाबेथ की ओर देखा. अच्छे कपड़े पहने हुए शिष्ट महिलाएँ कभी जेल के पास नहीं फटकती थीं. पर यह एक अजीब महिला थी जो अंदर आने की जिद कर रही थी.

"चलो ठीक है," अंत में गार्ड ने कहा. "मैं आपको अंदर जाने दूंगा, लेकिन मैं खुद आपके साथ नहीं जाऊँगा.

मैं कभी भी अकेले अंदर नहीं जाता हूँ. मैं हमेशा अपने साथ कम-से-कम दो अन्य गार्डों को लेकर जाता हूँ. अंदर जाते वक्त अपनी रक्षा के लिए हम बड़ी लाठी लेकर जाते हैं. अगर आपको कोई नुक्सान पहुंचे तो फिर शिकायत न करें."

उसके बाद गार्ड ने एक बड़ी चाबी से लोहे का भारी दरवाज़ा खोला. एलिजाबेथ दरवाजे में से अंदर घुसी. पीछे से गार्ड ने दरवाज़े में फिर से ताला लगा दिया.

"ज़रा, यहाँ देखो," एक महिला कैदी ज़ोर से चिल्लाई. "देखो, एक सभ्य महिला हमसे मिलने आई है. हा! हा! हा!" वो चिल्लाई.

तभी दो कैदियों ने एलिजाबेथ की टोकरियों को कसकर अपनी ओर खींचा.

"तुम यहाँ क्या कर रही हो, लेडी?" एक महिला कैदी से गुस्से में पूछा.

"हम, तुम जैसे लोगों को पसंद नहीं करते हैं."

एलिजाबेथ फ्राई को कुछ समझ में नहीं आया, कि वो क्या करे. अब वो थोड़ा डर गई थी. अगर महिलाओं ने उस पर हमला किया तो क्या होगा?

अंदर जाकर एलिजाबेथ ने खुद को एक सुनसान, बदबूदार कमरे में खड़ा पाया. उसे चारों ओर एक भयानक शोर सुनाई दिया. वहां पर एक बीमार महिला रो रही थीं और चिल्ला रही थीं. बच्चे, भूख से बिलख रहे थे. एक कोने में, कुछ औरतें खाने के एक टुकड़े और कपड़े के छोटे चिथड़े पर लड़ रही थीं. "वो मेरे बच्चे का कम्बल है," एक महिला चिल्लाई. "उसे तुरंत वापिस करो!"

"तुम ज़रा उसे लेने की कोशिश करो," दूसरी महिला चिल्लाई. "मैं तुम्हारी आँखें नोच डालूंगी!"

अचानक, उसने एक रोते हुए बच्चे की आवाज़ सुनाई दी. बच्चा नंगा था, उसके पास कोई कपड़े नहीं थे. और वो ठंड से कांप रहा था. एलिजाबेथ को बच्चे पर इतनी दया आई कि उसका अपना सारा डर रफू-चक्कर हो गया.

एलिजाबेथ ने अपनी टोकरियाँ नीचे रखीं और फिर वो बच्चे के पास गई. उसने बच्चे को धीरे से उठाया और उसकी पीठ थपथपाई. फिर उसने टोकरी से एक शर्ट और पैंट निकाली और उन्हें उस बच्चे को पहनाया. बच्चे ने तुरंत रोना बंद कर दिया. फिर जेल के कमरे में एकदम सन्नाटा छा गया. आगे क्या होगा? उसका सभी कैदी इंतजार करने लगे.

"बहनों," एलिजाबेथ ने अपनी बात शुरू की, "मैं एलिजाबेथ फ्राई हूं. मैं आपके साथ दोस्ती करना चाहती हूँ. मैंने सुना है कि यहां जेल में आप बहुत कठिन जीवन जीती हैं. मैं आपकी मदद करना चाहती हूं. मैंने सुना है कि आपके बच्चों के पास पर्याप्त कपड़े तक नहीं हैं. इसलिए मैं उनके लिए कुछ कपड़े लाई हूँ. मैंने सुना है कि आपके पास भरपेट भोजन भी नहीं है. इसलिए मैं कुछ भोजन भी लाई हूँ, आपको और क्या चाहिए? मैं आपके लिए और क्या कर सकती हूँ? "

एलिजाबेथ की बात सुनकर महिलाएं दंग रह गईं. आज तक किसी ने कभी भी उनसे नहीं पूछा था, कि उन्हें क्या चाहिए.
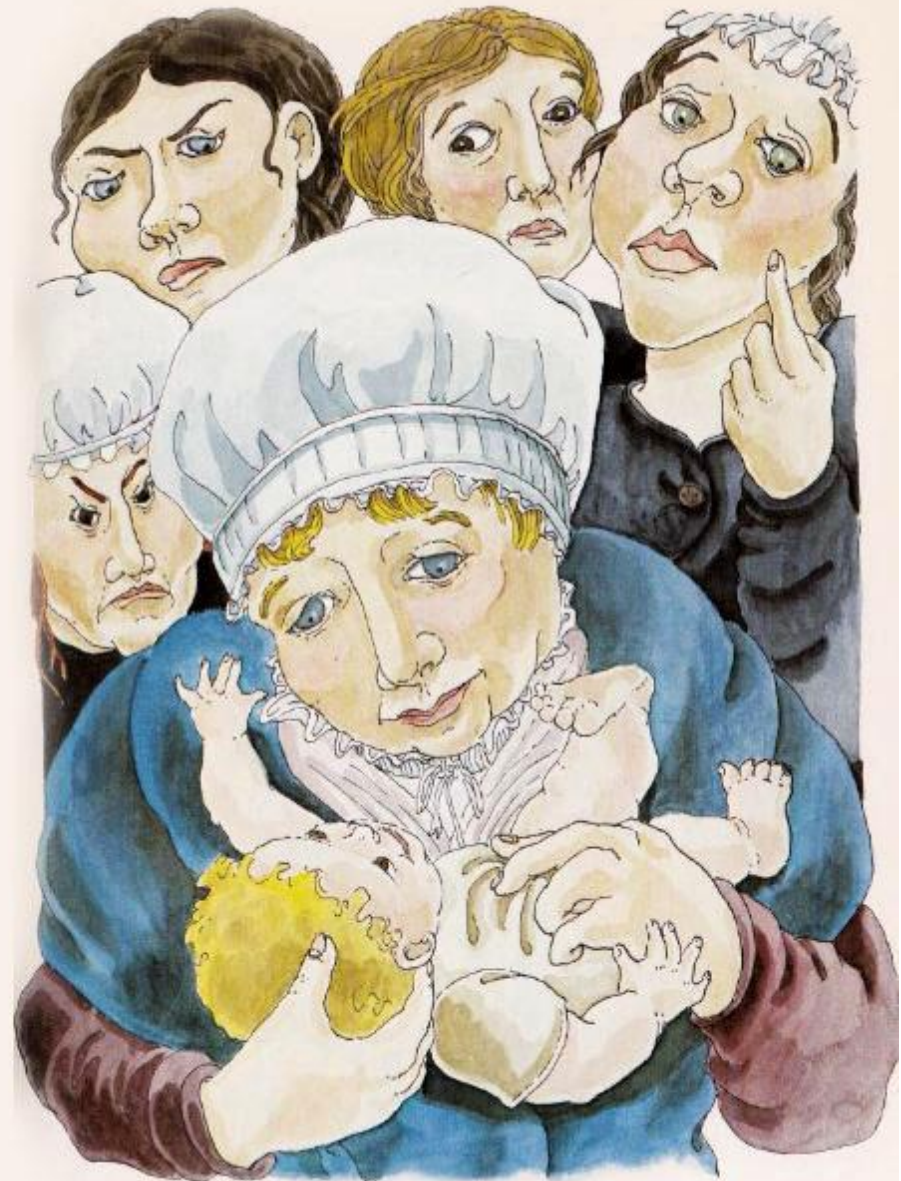
अंत में, एक युवती ने कदम आगे बढ़ाया. "हमें खाना चाहिए," उसने कहा. "और हमें कपड़े भी चाहिए. लेकिन हमारी सबसे बड़ी ज़रुरत है - हमें करने के लिए कुछ उपयोगी काम चाहिए. हम इतने ऊब गए हैं कि हम दिन भर बस एक-दूसरे से लड़ते और चिल्लाते रहते हैं."

एक और महिला ने अपनी छोटी लड़की को आगे बढ़ाया. "मेरी छोटी लड़की सात साल की है," उसने कहा. "वह मेरे साथ इस सड़ी जगह पर इसलिए रहने को मज़बूर है क्योंकि और कोई उसकी देखभाल नहीं करेगा. मुझे डर है कि वह भी मेरी तरह ही बिगड़ जाएगी. काश, वह केवल पढ़ना सीख पाती? लेकिन यहाँ हमारे पास कोई किताब नहीं है. क्या आप कुछ किताबें ला सकती हैं - पुस्तकें?"

"हाँ," एलिजाबेथ फ्राई ने कहा. "मैं देख रही हूं कि आपकी और आपके बच्चों की तमाम जरूरतें हैं.

आइए हम सब बैठकर
उनके बारे में
बात करें."

एलिजाबेथ और महिला कैदियों ने पूरी दोपहर बात की और एक योजना बनाई. अंत में, एलिजाबेथ ने कहा, "अब मुझे जाना चाहिए. लेकिन जाने से पहले, मैं बाइबल से आपको कुछ पढ़कर सुनाऊँगी. *'ईश्वर हमारा आश्रय है और वही हमारी शक्ति है,'* एलिजाबेथ ने पढ़ा," *'मुसीबत के समय में ईश्वर हमेशा मदद करने को तैयार रहता है.'*"

सारी महिलाएं कृतज्ञ थीं. इससे पहले किसी ने भी उन्हें बाइबल पढ़कर नहीं सुनाई थी. अब वे देख सकती थीं कि मुसीबत की घड़ी में ईश्वर उनकी मदद ज़रूर करेगा. क्या ईश्वर ने ही एलिजाबेथ को उनके पास भेजा था?

घर लौटने के बाद एलिजाबेथ अपने सभी दोस्तों के पास गई. "हमें वहां क्या-क्या करना चाहिए," उसने कहा, "हमें जेल को साफ करने में महिलाओं की मदद करनी चाहिए. वहां पर बेहद गंदगी है. हमें वहां बच्चों के लिए एक स्कूल शुरू करना चाहिए, और हमें महिलाओं को सिलाई सिखानी चाहिए. हमें बहुत सी चीजों की आवश्यकता होगी - झाड़ू-पोछा, बाल्टियां, किताबें, कागज़, पेंसिल, कपड़ा, धागा, सुइयां आदि. क्या आप लोग इनमें से कुछ चीज़ें लाकर कल सुबह मुझ से न्यूगेट में मिल सकते हैं?"

एलिजाबेथ के मित्र उसकी मदद के लिए तैयार हो गए.

अगली सुबह, जब एलिजाबेथ फ्राई और उसके दोस्त जेल में मिले, तो गार्ड ने उन्हें बिना बहस के अंदर जाने दिया. "भगवान, तुम्हारा भला करे!," उसने उन महिलाओं से कहा.

"हेलो! यह हमारी दोस्त है, एलिजाबेथ फ्राई. वह हमारी परी है!" महिला कैदियों को रोते हुए कहा. "तुम क्या लाई हो? तुम्हारे साथ वो औरतें कौन हैं?"

"ये महिलाएं यहां मदद करने के लिए आई हैं," एलिजाबेथ ने कहा. “वे हमारी मित्र हैं. हम सफाई करने के लिए सामान लाए हैं. हम आपके बच्चों के लिए एक स्कूल शुरू करने के लिए किताबें भी लाए हैं. लेकिन उन्हें एक शिक्षक की आवश्यकता होगी. क्या आप में से कोई पढ़ना-लिखना जानता है?”

"मैं जानती हूँ," एक शर्मीली युवती ने कहा. "मैं स्कूल की टीचर बनूंगी. शायद ऐसा करके मैं अपने कुकर्मों का कुछ प्रायश्चित कर सकूं."

"ठीक!" एलिजाबेथ ने कहा. "हम आज से ही स्कूल शुरू करेंगे."
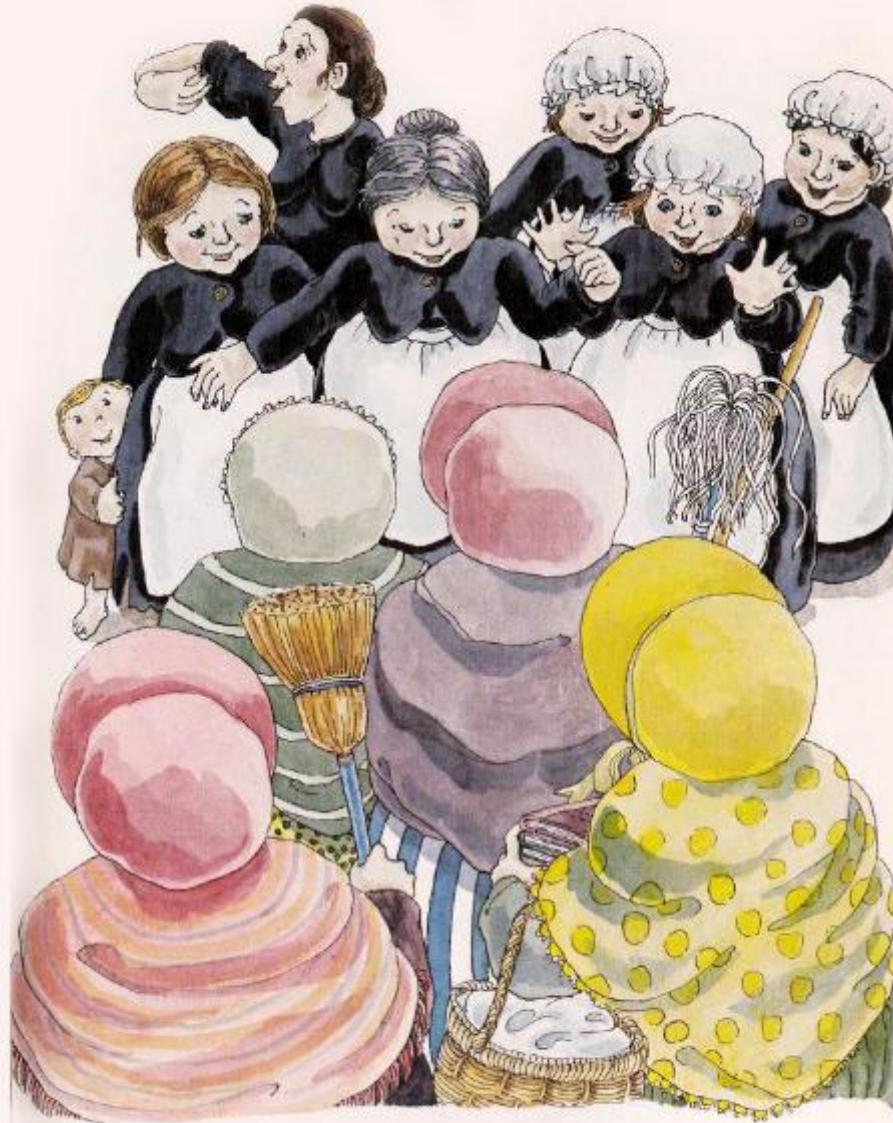
सभी ने मदद की. कुछ महिलाएं साबुन और पानी के साथ सफाई करने चली गईं. अन्य औरतों ने स्कूल के लिए कुर्सी-मेज और बुक-शेल्फ स्थापित किए.

जल्द ही बच्चे भी अपने-अपने काम में व्यस्त हो गए. अब जेल की दीवारें और फर्श इतने भद्दे नहीं दिख रहे थे.
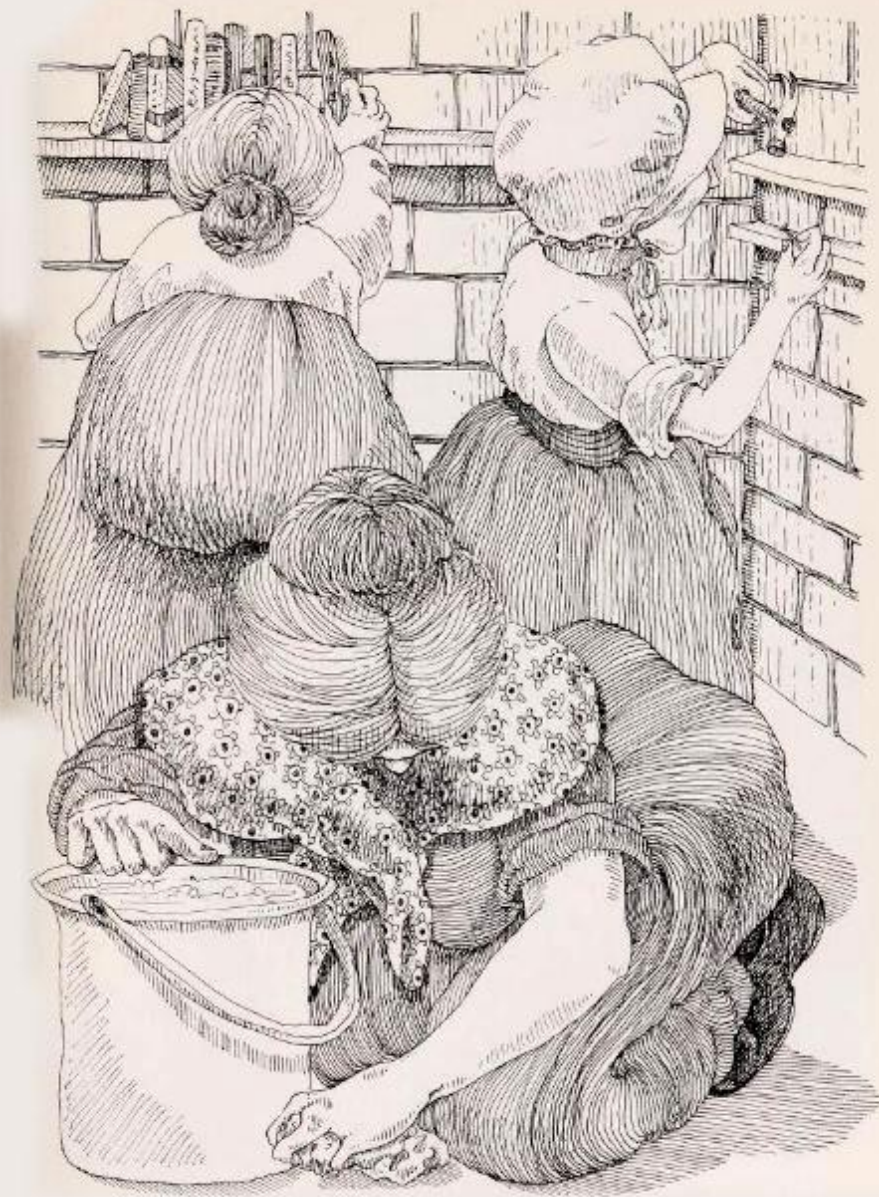
"देखो," एलिजाबेथ ने कहा, "हमारे पास सुई, धागा और कपड़ा भी है. आप लोग सिलाई करना सीख सकती हैं. और फिर आप अपने कपड़े खुद बना सकती हैं. मैं आपकी बनाई चीजों को बेचने में आपकी मदद करूंगी. तब आपके पास अपनी ज़रुरत की चीज़ें खरीदने के लिए पैसे भी होंगे."

यह सब देखकर महिलाएं उत्साहित हुईं. जेल से बाहर निकलने पर वो अब अपनी आजीविका चला सकती थीं. फिर उन्हें कभी भी चोरी करने की ज़रुरत नहीं होगी.
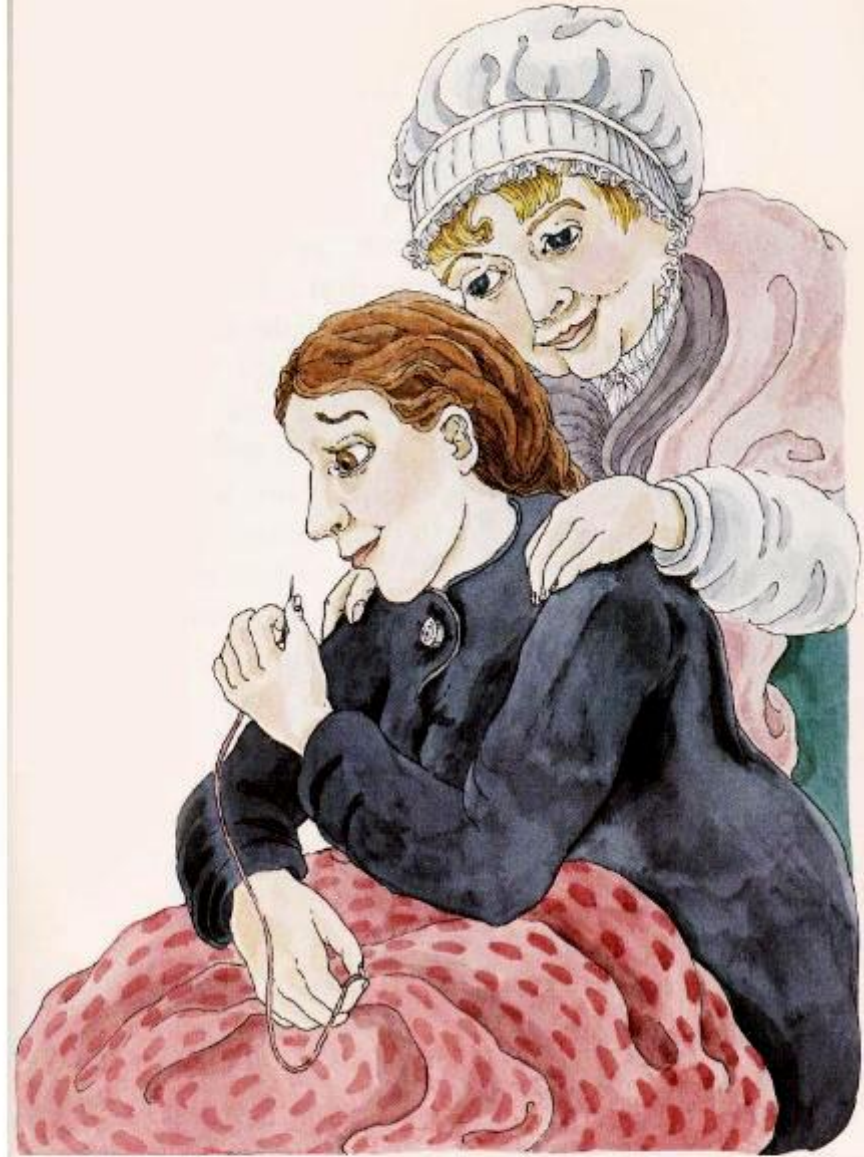
एलिजाबेथ फ्राई और उसके दोस्त हर दिन जेल में जाते और महिला कैदियों के साथ लम्बा समय गुजारते. कैदियों ने सुंदर रजाई और बच्चे के कपड़े सिलना और फ्रॉक बनाना सीखे. एलिजाबेथ ने उनकी चीजें बेचीं. उसने वो पैसे कैदियों को दिए.

हर दिन एलिजाबेथ बाइबल से उनके लिए कुछ पढ़ती थी. कैदियों को बाइबिल की बातें सुनना अच्छा लगता था. उन्होंने सीखा कि भगवान सच में उनसे कितना प्यार करते थे. उन्होंने भगवान के बताए रास्ते पर जीने की कोशिश करने का सबक भी सीखा.

एलिजाबेथ फ्राई जो कुछ कर रही थीं उसकी खबर पूरे इंग्लैंड में फैली. जल्द ही बहुत बहुत से महत्वपूर्ण लोग एलिजाबेथ से उसकी सफलता का राज पूछने लगे.

वे लोग भी कैदियों की मदद करना चाहते थे.

एलिजाबेथ फ्राई ने कहा, "मेरा रहस्य सरल है. मैं कैदियों को बताती हूं कि भगवान उनसे प्यार करते हैं. उन्हें क्या चाहिए यह मैं उनसे पूछती हूं."

**एलिजाबेथ कुरनई फ्राई** (1790-1845), एक गहरी धार्मिक, गहरी और दृढ़ महिला थीं. वो अपने समय की एक चमत्कारिक समाज सुधारक थीं. आज के ज़माने में भी उन्हें बहुत प्रभावशाली माना जाता. उन्होंने पूरे इंग्लैंड में जेल सुधार लागू किये. उन्होंने संसद के सामने व्यक्तिगत रूप से गवाही दी और जेल सुधार कानूनों के पारित होने और उन्हें लागू करने के लिए काम किया.

बड़े पैमाने पर जेल सुधार के लिए काम करते हुए भी, एलिजाबेथ फ्राई ने व्यक्तिगत रूप से कैदियों और उनकी समस्याओं के साथ कभी भी संपर्क नहीं खोया. वह उनसे मिलने जातीं, उनके भोजन और अन्य आवश्यकताओं का प्रबंध करतीं, उन्हें नैतिक और आध्यात्मिक आराम प्रदान करतीं और रिहाई के बाद भी उनके जीवन में रुचि लेने के लिए लगातार उनसे मिलती रहतीं. फांसी से पहले की वो पूरी रात कैदियों के साथ बिताती थीं.

यद्यपि एलिजाबेथ फ्राई को मुख्य रूप से जेल सुधार के लिए जाना जाता है, पर उनके जीवन की कई अन्य उपलब्धियां भी हैं.

एलिजाबेथ, क्वेकर के रूप में बड़ी हुई थीं. लेकिन उनके परिवार ने क्वेकर धर्म के नियमों का कड़ाई से पालन नहीं किया और उन्होंने दुनियादारी को ही सही माना. सत्रह वर्ष की आयु में, एलिजाबेथ ने एक धार्मिक रूपांतरण किया और अपने जीवन को सार्थक बनाने की कसम खाई.

उसने पिता से मिली संपत्ति में से गरीब गाँव के बच्चों के लिए एक स्कूल शुरू किया. उसने पड़ोस में बीमार और गरीब लोगों की सेवा की और उनका पालन-पोषण किया.

जब जोसेफ फ्राई ने पहली बार एलिजाबेथ के सामने शादी का प्रस्ताव रखा तो उसने मना कर दिया क्योंकि उसके जीवन का मिशन धर्मार्थ कार्य करना था. जोसेफ ने वादा किया कि शादी के बाद वो एलिजाबेथ के ईश्वर-प्रदत्त, सेवा कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेगा. बाद के वर्षों में जोसेफ ने जेल सुधार कार्य में एलिजाबेथ की मदद भी की.

एलिजाबेथ और जोसेफ फ्राई के बारह बच्चे थे. लेकिन अपने बड़े परिवार के साथ भी, एलिजाबेथ ने अपने समय, धन और ऊर्जा के दान में कभी कमी नहीं की. अन्य कामों के अलावा, उसने कम-से-कम दो स्कूलों की स्थापना की, बीमारों की सेवा की, क्वेकर चर्च में एक मंत्री बनी, और फांसी की सजा को खत्म करने का लगातार प्रयास किया, और साथ-साथ इंग्लैंड में मुफ्त (सार्वजनिक) स्कूलों की पैरवी की.

एलिजाबेथ फ्राई ने सचमुच में यीशु की सीख पर अमल किया - उसने भूखों को खाना खिलाया, बीमारों को कैदियों को सांत्वना दी.

**समाप्त**